SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-02| Issue-04| June- 2025
Available online at: https://shikshasamvad.com/

प्रतापगढ़ जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. डालचन्द आनन्द
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, मदनमोहन मालवीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कालाकाँकर, प्रतापगढ़

सारांश

शोधकर्ता ने इस अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया है कि विद्यार्थियों के पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह अध्ययन सर्वेक्षण विधि पर आधारित है, जिसमें जनपद प्रतापगढ़ के माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा–12 के 100 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना गया। आंकड़ों के संग्रहण हेतु शोधकर्ता ने स्वनिर्मित पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण प्रश्नावली का प्रयोग किया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह–संबंध की जाँच हेतु कार्ल पीयर्सन की गुणन आपूर्ण विधि का उपयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि प्रभावात्मक पारिवारिक अनुशासन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में मुक्तयात्मक तथा दमनात्मक अनुशासन की तुलना में अधिक प्रभावशाली होता है।

1. प्रस्तावना

बालक के सर्वांगीण विकास में केवल विद्यालयी अनुशासन ही नहीं, बल्कि पारिवारिक वातावरण और अनुशासन भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस विषय पर किए गए विभिन्न शोध कार्यों से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि अभिभावक अपने बच्चों को जिस प्रकार के अनुशासन में रखते हैं, उसका सीधा प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर पड़ता है, जो आगे चलकर उनकी शैक्षिक उपलब्धियों को भी प्रभावित करता है।

अनेक शोधों में यह बताया गया है कि बालक की शिक्षा को प्रभावित करने वाले अनेक कारक होते हैं, जैसे माता–पिता का स्नेह, सहभागिता, प्रेरणा, सहानुभूति, बच्चों की सीमाएँ, क्षमताएँ, रुचियाँ और योग्यताएँ। इन सबके अतिरिक्त गृह वातावरण भी एक प्रमुख कारक है। बालक का वंशानुक्रम और पारिवारिक परिवेश उसकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। सामान्यतः अधिक बुद्धिलब्धि वाले बालक की शैक्षिक उपलब्धि कम बुद्धिलब्धि वाले बालक से बेहतर होती है। किंतु यदि दो बालकों की बुद्धिलब्धि समान हो, तो जिस बालक को अपेक्षाकृत उत्तम पारिवारिक वातावरण प्राप्त होगा, उसकी शैक्षिक उपलब्धि दूसरे बालक से श्रेष्ठ होगी।

बच्चों के व्यवहार, व्यक्तित्व और शैक्षिक उपलब्धियों पर पारिवारिक परिवेश और अनुशासन का गहरा प्रभाव पड़ता है। बालक के पूर्ण विकास के लिए उसमें स्वतंत्रता का गुण आवश्यक है। स्वतंत्रता के अभाव में उसकी व्यक्तिगत रुचियों,

संवेगों, शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सौंदर्यात्मक शक्तियों का विकास संभव नहीं हो पाता। प्रायः देखा गया है कि जब बालक को अत्यधिक नियंत्रित वातावरण में किसी कार्य को करने के लिए बाध्य किया जाता है, तो वह भयवश उस कार्य को करता तो है, परंतु उसमें आनंद का अनुभव नहीं करता। इसके विपरीत, यदि उसे अपनी इच्छा अनुसार कार्य करने की स्वतंत्रता दी जाए, तो वह उसे खेल की तरह प्रसन्नतापूर्वक करता है। इससे उसे मुक्त चिंतन के अवसर मिलते हैं और उसमें पहल करने तथा निडरता जैसे गुणों का विकास होता है।

यदि परिवार का वातावरण और अनुशासन दमनात्मक, रोबदार तथा डांट–डपट से भरा हो, तो यह बालक के विकास की दृष्टि से उचित नहीं माना जाता। वहीं अत्यधिक स्वतंत्रता और हस्तक्षेप रहित वातावरण भी विद्यार्थियों के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है।

इस शोध में विभिन्न प्रकार के पारिवारिक अनुशासनिक वातावरणों का बालकों की शैक्षिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया है। इसके निष्कर्ष न केवल बालकों के लिए, बल्कि शिक्षकों और अभिभावकों के लिए भी उपयोगी और मार्गदर्शक सिद्ध होंगे।

शोधकर्ता ने इस अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया है कि विद्यार्थियों के पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह अध्ययन सर्वेक्षण विधि पर आधारित है, जिसमें जनपद प्रतापगढ़ के माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा–12 के 100 छात्र–छात्राओं को न्यादर्श के रूप में चुना गया।

2. अध्ययन की सार्थकता

शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बालक के ज्ञान, चरित्र और व्यवहार को एक विशेष ढाँचे में ढाला जाता है तथा उसके आचरण में परिवर्तन लाया जाता है। इन परिवर्तनों को साध्य करने के लिए शिक्षा के औपचारिक और अनौपचारिक दोनों साधनों का उपयोग किया जाता है। परिवार को शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण अनौपचारिक साधन माना गया है।

बालक को एक छोटे पौधे के समान समझा जा सकता है। जिस प्रकार पौधे को फलने–फूलने के लिए खुला और स्वाभाविक वातावरण चाहिए, उसी प्रकार बालक को भी उचित वातावरण और अनुशासन की आवश्यकता होती है। जितना अनुकूल वातावरण और संतुलित अनुशासन उसे मिलेगा, उतना ही उसका विकास उत्तम होगा।

उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र किशोरावस्था में होते हैं और इस अवस्था में वे प्रायः अपने निर्णय स्वयं लेने लगते हैं। उनके व्यक्तित्व और शैक्षिक उपलब्धियों पर अनुशासन की विभिन्न व्यवस्थाओंकृजैसे दमनात्मक अनुशासन, प्रभावात्मक अनुशासन तथा मुक्तयात्मक अनुशासनकृका गहरा प्रभाव पड़ता है।

इसी तथ्य को जानने के उद्देश्य से कि परिवारों में प्रचलित अनुशासनिक व्यवस्थाएँ बालकों की शैक्षिक उपलब्धियों को किस प्रकार प्रभावित करती हैं, शोधकर्ता ने इस समस्या को अध्ययन हेतु चुना है।

3. शोध में प्रयुक्त पदों की क्रियान्वित परिभाषाएँ

3.1 अनुशासन

अनुशासन वह साधन है जिसके माध्यम से बच्चों को व्यवस्था, उत्तम आचरण तथा उनके भीतर निहित श्रेष्ठ गुणों को विकसित करने की आदत डाली जाती है। इसका उद्देश्य उन्हें नियंत्रित और संतुलित जीवन जीने के लिए प्रशिक्षित करना है।

3.2 शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि उस दक्षता को प्रदर्शित करती है जो किसी विषय या विषयों के समूह की समझ, ज्ञान और अधिगम के स्तर को दर्शाती है। यह विद्यार्थियों की शिक्षा में अर्जित योग्यता और प्रदर्शन का सूचक है।

3.3 पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण

पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण से आशय पूरे घर और परिवार के माहौल से है। इसमें माता–पिता, भाई–बहन और बच्चों के बीच आपसी संबंध, परिवार के सदस्यों के बीच तनावपूर्ण या प्रेमपूर्ण व्यवहार, तथा घर का समग्र वातावरण शामिल होता है। यह वातावरण बालक के व्यक्तित्व और शैक्षिक उपलब्धियों पर गहरा प्रभाव डालता है।

4. शोध के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर दमनात्मक, प्रभावात्मक व मुक्तयात्मक पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण के प्रभाव का विश्लेषण करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर दमनात्मक, प्रभावात्मक व मुक्तयात्मक पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण के प्रभाव का विश्लेषण करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर दमनात्मक, प्रभावात्मक व मुक्तयात्मक पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण के प्रभाव का विश्लेषण करना।

5. शोध की परिकल्पनाएँ

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर दमनात्मक पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभावात्मक पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मुक्तयात्मक पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

6. जनसंख्या

इस शोध अध्ययन में जनसंख्या के रूप में जनपद–प्रतापगढ के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा–12 के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

6. न्यादर्श

शोधकर्ता ने इस अध्ययन के लिए न्यादर्श के रूप में 100 छात्र–छात्राओं का चयन सरल यादृच्छिक निदर्शन विधि (Simple Random Sampling Method) से किया है।

7. उपकरण

अध्ययन की समस्या से संबंधित आंकड़ों के संग्रहण हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

8. सांख्यिकीय विधि

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन करने के लिए कार्ल पीयरसन की गुणन आपूर्ण विधि (Product Moment Method) का उपयोग किया गया।

9. विश्लेषण एवं व्याख्या

© Shiksha Samvad| Received: 01 June 2025 | Accepted: 05 June 2025 | Published: 11 June 2025

पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण प्रश्नावली से प्राप्त अंकों तथा विद्यार्थियों के कक्षा–11 के अंकों के मध्य सहसंबंध ज्ञात कर विश्लेषण एवं व्याख्या की गई।

तालिका संख्या–1

विद्यार्थियों के पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण की स्थिति

क्र.स.	अनुशासन की श्रेणी	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत (%)
1	दमनात्मक अनुशासन	35	35%
2	प्रभावात्मक अनुशासन	49	49%
3	मुक्त्याात्मक अनुशासन	16	16%

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश, अर्थात 49 प्रतिशत का पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण प्रभावात्मक प्रकृति का है। वहीं, 35 प्रतिशत विद्यार्थी दमनात्मक अनुशासनिक वातावरण में रहतें हैं। इसके विपरीत केवल 16 प्रतिशत विद्यार्थियों का पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण मुक्त्यात्मक है, जो कि सबसे कम प्रतिशत हैं।

परकिल्पना–1 : उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर दमनात्मक पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

तालिका संख्या–2

दमनात्मक पारिवारिक अनुशासन और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य परस्पर संबंध

क्र.स.	विद्यार्थियों की संख्या	अनुशासन की श्रेणी	सहसंबंध
1	35	दमनात्मक अनुशासन	-0.55

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि दमनात्मक पारिवारिक अनुशासन और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह–संबंध गुणांक –0.55 है। इसका अर्थ है कि दमनात्मक पारिवारिक अनुशासन और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य मध्यम स्तर का ऋणात्मक सह–संबंध है। इसके आधार पर कहा जा सकता है कि दमानात्मक अनुशासनिक वातावरणीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। अर्थात जब बच्चों पर अत्यधिक नियंत्रण, कठोरता या दमनात्मक व्यवहार होता है तो उनकी पढाई में प्रदर्शन अपेक्षाकृत कमजोर होता है।

परकिल्पना–2 : उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभावात्मक पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

तालिका संख्या–3

प्रभावात्मक पारिवारिक अनुशासन और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य परस्पर संबंध

क्र.स.	विद्यार्थियों की संख्या	अनुशासन की श्रेणी	सहसंबंध
1	49	प्रभावात्मक अनुशासन	0.71

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि प्रभावात्मक पारिवारिक अनुशासन और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह–संबंध गुणांक 0.71 है। इसका अर्थ है कि प्रभावात्मक पारिवारिक अनुशासन और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य उच्च धनात्मक सहसंबंध है। इसके आधार पर कहा जा सकता है कि प्रभावात्मक अनुशासनिक

वातावरणीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। अर्थात जिन छात्रों का पारिवारिक वातावरण अनुशासित, सहयोगी और प्रभावी है, उनकी शैक्षिक उपलब्धि सामान्यतः अधिक होती है जैसे–जैसे परिवार में सकारात्मक अनुशासन और सहयोग बढ़ाता है, वैसे–वैसे बच्चों की शैक्षिक सफलता भी बढ़ने की संभावना रहती हैं।

परकिल्पना–3 : उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मुक्त्यात्मक पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

तालिका संख्या–4

मुक्त्यात्मक पारिवारिक अनुशासन और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य परस्पर संबंध

क्र.स.	विद्यार्थियों की संख्या	अनुशासन की श्रेणी	सहसंबंध
1	16	मुक्त्यात्मक अनुशासन	0.50

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि मुक्त्यात्मक पारिवारिक अनुशासन और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह–संबंध गुणांक 0.50 है। इसका अर्थ है कि मुक्त्यात्मक पारिवारिक अनुशासन और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य औसत धनात्मक सहसंबंध है। इसके आधार पर कहा जा सकता है कि मुक्त्यात्मक अनुशासनिक वातावरणीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। अर्थात जब बच्चों को स्वतंत्र वातावरण मिलता है तो वह शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने में मदद करता है।

शोध के परिणाम

1. जिन छात्रों का पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण दमनात्मक होती है उन बच्चों की उपलब्धि निम्न स्तर की होती है।
2. जिन छात्रों का पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण प्रभावात्मक होता है, वे प्रायः उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करते हैं।
3. जिन छात्रों का पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण मुक्त्यात्मक होता है, उनकी शैक्षिक उपलब्धि सामान्यतः औसत स्तर की पाई जाती है।

शोध निष्कर्ष

परिणाम यह दर्शाते हैं कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए प्रभावात्मक परिवारिक अनुशासनिक व्यवस्था सबसे उपयुक्त है। प्रभावात्मक अनुशासन–संतुलित, सहयोगी और मार्गदर्शक वातावरण, जो बच्चों की शैक्षिक अपलब्धि को सबसे अधिक बढ़ावा देता है। दमनात्मक अनूशासन–अत्यधिक नियंत्रण और कठोरता, जिससे बच्चों की उपलब्धि घटती है। मुक्त्यात्मक अनुशासन–अत्यधिक स्वतंत्रता, जिससे बच्चों की उपलब्धि औसत रहती है और अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँचती। अतः विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता को उच्चतर बनाने के लिए अभिभावकों को प्रभावात्मक अनुशासनिक वातावरण अपनाना चाहिए।

शोध सन्दर्भ

1. कुमार, आर., अग्रवाल, शोभिता. (2023). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं पारिवारिक वातावरण में संबंध का अध्ययन- [International Journal of Applied Research] 9(1), 171–177.

2. सिंह, रंजना. (2023). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन. International Journal of Literacy and Education, 3(1), 118.
3. चौधरी, डी. (2022). प्रभावात्मक अनुशासनिक वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषण. शिक्षा अध्ययन पत्रिका, 19(1), 33–41.
4. जोशी, के. (2021). पारिवारिक सहयोग और शैक्षिक उपलब्धि का सहसंबंध. भारतीय शिक्षा जर्नल, 15(2), 120–128.
5. शर्मा, आर. (2020). अनुशासनिक वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि: एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण. मनोविज्ञान पत्रिका, 22(3), 101–110.
6. वर्मा, एस. (2019). पारिवारिक वातावरण और विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता का संबंध. शिक्षा विमर्श, 14(1), 88–95.
7. गुप्ता, पी. (2018). मुक्त्यात्मक एवं दमनात्मक अनुशासन का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर प्रभाव. शिक्षा और समाज, 10(4), 67–74.
8. श्राफ, संगीता, झा, प्रज्ञा. (2018). पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन. International Research Journal of Management Sociology & Humanities] 9(11)] 136–141- https://doi-org/10-32804/IRJMSH
9. खन्ना, एम. (2017). पारिवारिक अनुशासनिक व्यवस्था और शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 12(2), 45–53.
10. सिंह, ए. (2016). विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में पारिवारिक अनुशासन की भूमिका. शिक्षा शोध, 8(3), 55–62.

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

Cite this Article:

डा. डालचन्द आनन्द, "प्रतापगढ़ जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर प्रभाव का अध्ययन" *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 2, Issue 4, pp.325-330, June 2025. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ. डालचन्द आनन्द

For publication of research paper title

प्रतापगढ़ जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के पारिवारिक अनुशासनिक वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर प्रभाव का अध्ययन

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-04, Month June 2025, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/